

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 2 अध्याय 7: भगवान् के लीला-अवतारों की कथाएँ

13 September 2026

🙏 पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।

🙏 पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



उस वराह से जिन्होंने डूबती पृथ्वी को उठाया, उस भगवान् तक जो एक दिन कल्कि के रूप में प्रकट होंगे — ब्रह्मा नारद को उन असंख्य लीला-अवतारों की कथा सुनाते हैं जिनके द्वारा वह एक परम पुरुष युगों को पार करते हैं और अपनी सृष्टि की रक्षा करते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

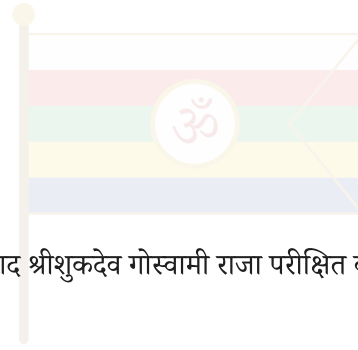
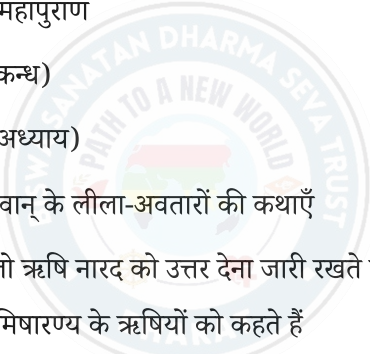
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। पूर्व अध्याय में ब्रह्मा ने विराट् पुरुष की महिमा तथा भक्ति-मार्ग के सौन्दर्य का वर्णन अभी-अभी समाप्त किया था — एक ऐसा वर्णन जो इतना अमृतमय था कि नारद ने उसके अन्त में अपने पिता से और अधिक सुनने की प्रार्थना की: उसी सांस में भगवान् के अपने लीला-अवतारों के विषय में सुनने की। यह सप्तम अध्याय ब्रह्मा का उदार उत्तर है। यहाँ सृष्टिकर्ता स्वयं कथाकार बन जाते हैं, उस एक परम पुरुष के अवतार-पर-अवतार से होते हुए तीव्र गति से तथा आनन्दपूर्वक आगे बढ़ते हैं — वराह, कपिल, दत्तात्रेय, चार कुमार, ध्रुव, पृथु, मत्स्य, कूर्म, नृसिंह, वामन, राम, कृष्ण-बलराम, व्यास, बुद्ध, और अन्ततः कल्कि, जो अभी आना शेष है। यह सम्पूर्ण भागवत के सर्वाधिक प्रिय अध्यायों में से एक है, क्योंकि पिता-पुत्र के एक ही संवाद में भगवान् की समस्त युगों में की गई क्रियाओं का विस्तृत दृश्य समाहित हो जाता है।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 2 (द्वितीय स्कन्ध)
- अध्याय: 7 (सप्तम अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: भगवान् के लीला-अवतारों की कथाएँ
- मुख्य वक्ता: ब्रह्मा, जो ऋषि नारद को उत्तर देना जारी रखते हैं — यह संवाद श्रीशुकदेव गोस्वामी राजा परीक्षित को सुनाते हैं, और सूत गोस्वामी उसे पुनः नैमिषारण्य के ऋषियों को कहते हैं
- मुख्य श्रोता: ऋषि नारद, ब्रह्मा के पुत्र (कथित संवाद के भीतर); राजा परीक्षित (श्रीशुकदेव से सुनते हुए); तथा ऋषि शौनक एवं नैमिषारण्य का ऋषि-समुदाय (सूतजी से सुनते हुए)
- मुख्य स्थान: सृष्टि का आदिम प्रभात, ब्रह्मा के आसन पर; जो श्रीशुकदेव के परीक्षित को दिए गंगा-तटीय उपदेश तथा नैमिषारण्य के वन-आश्रम के भीतर कथित है
- मुख्य विषय-वस्तु: ब्रह्मा द्वारा भगवान् के प्रमुख लीला-अवतारों की सूची — डूबती पृथ्वी को उठाने वाले वराह से आरम्भ होकर कलियुग के भावी दण्डदाता तक — तथा अन्त में भगवान् के अगम्य स्वरूप पर एक चिन्तन एवं नारद को भागवत का विस्तार करने का आदेश
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 2, अध्याय 7, श्लोक 1-53
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण



आरम्भिक अवतार: वराह, कापेल, दत्त, कुमार, नर-नारायण

ब्रह्मा उस अवतार से आरम्भ करते हैं जो इस ब्रह्माण्ड के इतिहास के क्रम में सर्वप्रथम आता है। जब पृथ्वी विशाल ब्रह्माण्डीय सागर में डूब गई थी, तब असीम शक्तिशाली भगवान् ने वराह का रूप धारण किया, उसे अपने दाँत पर उठाया, और उनका विरोध करने वाले प्रथम दैत्य हिरण्याक्ष को छेद दिया। ब्रह्मा तत्पश्चात् शीघ्रता से कई अन्य अवतारों में से गुजरते हैं। स्वायम्भुव मनु के वंश में सुयज्ञ के रूप में जन्म लेकर, भगवान् ने उस युग के इन्द्र के रूप में शासन किया और तीनों लोकों की महान् पीड़ा को दूर किया, जिससे “हरि” नाम प्राप्त हुआ। ऋषि कर्दम तथा उनकी पत्नी देवहूति के पुत्र कपिल के रूप में, भगवान् ने अपनी ही माता को आत्म-साक्षात्कार का मार्ग सिखाया, जिससे वे उसी जीवन में मुक्त हो गई। पुत्र के लिए प्रार्थना करने वाले ऋषि अत्रि से भगवान् ने स्वयं को वचन दिया, “मैंने स्वयं को तुम्हें पुत्र के रूप में दे दिया है” — और इस प्रकार दत्तात्रेय, “दिया गया,” के रूप में जन्म लिया, जिनकी कृपा से यदु तथा सहस्रबाहु जैसे राजाओं को भोग तथा मुक्ति दोनों प्राप्त हुए। और सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्मा की अपनी तपस्या के प्रत्युत्तर में, भगवान् चार कुमारों — सनक, सनन्दन, सनातन, तथा सनत्कुमार — के रूप में प्रकट हुए, जिन्होंने पूर्व कल्प के अन्त में लुप्त हुए आत्म-तत्त्व की सच्चाई को पुनः स्थापित किया। इस आरम्भिक शृंखला में अन्त में, ब्रह्मा भगवान् के जुड़वाँ ऋषि नर तथा नारायण के रूप में जन्म की कथा सुनाते हैं, जो मूर्ति से जन्मे — जिनकी तपस्या इतनी पूर्ण थी कि जब कामदेव की स्वर्गीय अप्सराएँ उसे भंग करने आईं, तो उन्होंने स्वयं जैसी ही असंख्य अप्सराओं को उन ऋषियों की योग-शक्ति से प्रकट होते देखा — ऐसी प्रतिज्ञा जिसे न कोई क्रोध, न वासना का हल्का-सा भी स्पर्श कभी छू सकता था।



भगवान् दिव्य वराह के रूप में सृष्टि के आरम्भ में डूबती पृथ्वी को अपने दाँत पर उठाते हैं और दैत्य हिरण्याक्ष को छेद देते हैं (श्लोक 1)।

ध्रुव, पृथु, तथा ऋषभदेव

ब्रह्मा अब उन अवतारों की ओर मुड़ते हैं जिनमें भगवान् अपने ही शरीर से कम, अपितु असाधारण वरदानों तथा अपने प्रेरित भक्तों के माध्यम से अधिक कार्य करते हैं। अपने ही पिता के समक्ष अपनी सौतेली माता सुरुचि के तीखे वचनों से आहत होकर, बालक ध्रुव अकेले वन में तपस्या करने गए; उनकी स्तुति से प्रसन्न होकर, भगवान् ने उन्हें ध्रुवतारा का शाश्वत धाम प्रदान किया, जिसकी परिक्रमा आज भी स्वर्गीय ऋषि श्रद्धापूर्वक करते हैं। जब राजा वेन धर्म के मार्ग से इतना भटक गए कि ब्राह्मणों के शाप ने उनके सद्गुण तथा ऐश्वर्य को जला दिया और उन्हें नरक की ओर भेज दिया, तब भगवान् ने कृपा की और वेन के ही पुत्र, पृथु — मृत राजा के शरीर से मन्थन कर उत्पन्न — के रूप में प्रकट हुए,

जिन्होंने अपने पिता को उस नियति से बचाया और पृथ्वी को गाय के रूप में लेकर, संसार के हित के लिए उसकी समस्त उपज दुह ली। और राजा नाभि तथा रानी सुदेवी से जन्म लेकर, भगवान् ऋषभदेव के रूप में प्रकट हुए, जिन्होंने समस्त आसक्ति का इतना पूर्ण त्याग किया, और शुद्ध आध्यात्मिक लीनता में इतनी गहराई से स्थित हुए, कि संसार को वे एक जड़बुद्धि से अधिक कुछ प्रतीत नहीं हुए — वही अवस्था जिसे महान् ऋषि परमहंस की चरम स्थिति के रूप में सम्मानित करते हैं, जो सदैव आत्मा में लीन रहता है।

हयग्रीव, मत्स्य, तथा कूर्म

अगले अवतार पवित्र ज्ञान की रक्षा से सम्बन्धित हैं। ब्रह्मा द्वारा किए गए एक यज्ञ में, भगवान् स्वयं हयग्रीव के रूप में प्रकट हुए, स्वर्णिम वर्ण के, वेदों तथा यज्ञ के साक्षात् स्वरूप, जिनके नासिका-छिद्रों से, जैसे ही वे साँस लेते, पवित्र वेद-मन्त्र स्वयं प्रकट हो जाते थे। एक पूर्व युग के अन्त में, जब राजा सत्यव्रत को अगला मनु बनना था, तब उन्होंने भगवान् को दिव्य मत्स्य के रूप में देखा, जिन्होंने वेदों को — जो भय से ब्रह्मा के ही मुख से फिसल गए थे — उस भयंकर प्रलय के पार सुरक्षित पहुँचाया जिसने ब्रह्माण्ड को निगल लिया था, और अगली सृष्टि तक वहीं क्रीड़ा करते रहे। तथा जब देवताओं तथा दैत्यों ने मिलकर अमृत की खोज में मन्दराचल पर्वत से क्षीरसागर का मन्थन किया, तब भगवान् ने दिव्य कूर्म का रूप धारण किया, समस्त पर्वत को अपनी पीठ पर धारण किया — मन्थन के घर्षण से, ब्रह्मा कोमलता से बताते हैं, उनकी पीठ की खुजली शान्त हुई और उन्हें क्षणिक झपकी भी आ गई।



भगवान् दिव्य मत्स्य के रूप में वेदों को प्रलय के पार सुरक्षित ले जाते हैं, तथा दिव्य कूर्म के रूप में क्षीरसागर-मन्थन के समय मन्दराचल पर्वत को अपनी पीठ पर धारण करते हैं (श्लोक 12-13)।

नृसिंह तथा गजेन्द्र का उद्धार

अध्याय के सर्वाधिक जीवन्त दृश्यों में से दो अब आते हैं। देवताओं के महान् भय को दूर करने के लिए, भगवान् ने नृसिंह, नर-सिंह का रूप धारण किया, जिनका मुख अशान्त भौंहों तथा गतिशील जबड़ों से अत्यन्त भयावह प्रतीत होता था; जब दैत्यराज हिरण्यकशिपु ने उन पर गदा से प्रहार किया, तो भगवान् ने उसे पकड़कर अपनी ही जाँघों पर पटक दिया और अपने नखों से उसका उदर चीर डाला। तत्पश्चात् ब्रह्मा एक हाथी की कथा सुनाते हैं, जो अपने झुण्ड का नेता था, जिसे एक सरोवर में एक शक्तिशाली मगरमच्छ ने पैर से पकड़ लिया था। अपनी व्याकुलता में

उस हाथी ने अपनी सूँड में एक कमल उठाया और परम पुरुष, समस्त लोकों के रक्षक, को पुकारा, जिनका नाम मात्र सुनना ही पवित्र है। उस पुकार को सुनकर, अनन्त भगवान् हरि तत्क्षण प्रकट हुए, गरुड़ पर आरुढ़ तथा अपने सुदर्शन-चक्र से सुसज्जित, उन्होंने मगरमच्छ का सिर काट डाला, और कृतज्ञ हाथी को उसकी ही सूँड पकड़कर सुरक्षित निकाल लिया।



भगवान् नृसिंह, नर-सिंह, दैत्य हिरण्यकशिपु का वध कर देवताओं की रक्षा करते हैं, जबकि हाथी गजेन्द्र को गरुड़ पर आरुढ़ भगवान् हरि मगरमच्छ की पकड़ से उद्धार करते हैं (श्लोक 14-16)।

वामन तथा त्रिलोक का दान

अदिति के बारह पुत्रों में सबसे छोटे होते हुए भी, भगवान् वामन के रूप में गुणों में सबसे आगे थे: जैसे ही राजा बलि ने तीन पग भूमि का वचन दिया, उन्होंने अपने पगों से तीनों लोकों को नाप लिया। ब्रह्मा यहाँ रुककर गहरी शिक्षा उजागर करते हैं — भगवान् ने माँगना चुना, न कि सीधे ले लेना, यह दर्शाते हुए कि सर्वशक्तिमान भी वह नहीं छीनता जो अर्पित नहीं किया गया। बलि, अपने ही गुरु शुक्राचार्य द्वारा चेतावनी तथा शाप दिए जाने पर भी, अपने वचन के प्रति अटल रहे; उन्होंने अपना सिर तीसरे पग के रूप में भगवान् के चरणों में रख दिया, उस समर्पण को अपनी शक्ति से जीते हुए स्वर्ग-राज्य से भी अधिक मूल्यवान मानते हुए।

हंस, मनु, तथा धन्वन्तरि

ब्रह्मा फिर संक्षेप में तथा व्यक्तिगत रूप से नारद की ओर मुड़ते हैं: यह भगवान् ही थे, जो दिव्य हंस के रूप में प्रकट होकर — नारद की अपनी भक्ति से अत्यन्त प्रसन्न होकर — उन्हें भक्ति-योग तथा वह ज्ञान सिखाया जो आत्म-तत्त्व की सच्चाई प्रकट करता है, एक शिक्षा जिसे केवल वे आत्माएँ ग्रहण कर सकती हैं जिन्होंने वासुदेव की शरण ली है। प्रत्येक मन्वन्तर में, ब्रह्मा आगे कहते हैं, भगवान् मनु के रूप में प्रकट होते हैं, उस मानव-जाति की रक्षा करते हैं और समस्त दिशाओं पर निर्बाध अधिकार रखते हैं, उनकी महिमा परम स्वर्ग सत्यलोक तक पहुँचती है, और उनका शासन दुष्ट राजाओं को उचित दण्ड देता है। और धन्वन्तरि के रूप में अवतरित होकर, स्वयं महिमा-स्वरूप, भगवान् केवल अपने नाम के उच्चारण मात्र से पीड़ित मनुष्यों के रोगों को दूर करते हैं, अमरों के मध्य यज्ञ-भाग अर्जित करते हैं, तथा संसार को आयुर्वेद का विज्ञान सिखाते हैं।

परशुराम तथा राम का आगमन

जब क्षत्रिय-वंश उन्हीं ब्राह्मणों के विरुद्ध हो जाता है जिनकी उसे रक्षा करनी चाहिए और नरक की यातनाओं की ओर दौड़ पड़ता है, तब परम आत्मा परशुराम के रूप में प्रकट होती है, अत्यन्त पराक्रमी, और अपने तीक्ष्ण फरसे से उस पतित वंश को इक्कीस बार समूल नष्ट कर देती है। इस कठोर न्याय से ब्रह्मा एक अधिक कोमल, अभी आने वाले अवतार की ओर मुड़ते हैं: देवताओं पर सदैव कृपालु, भगवान् इक्ष्वाकु-वंश में श्रीराम के रूप में जन्म लेंगे, अपने अंश-अवतारों भरत, लक्ष्मण, तथा शत्रुघ्न के साथ, और अपने पिता दशरथ की आज्ञा से वन-वास को जाएँगे, सीता तथा लक्ष्मण को अपने साथ लेकर — एक ऐसा वनवास जिसमें दशमुखी रावण भगवान् का शत्रु बन जाएगा और विनाश को प्राप्त होगा। जब राम समुद्र-तट पर पहुँचेंगे, सीता के वियोग से उत्पन्न क्रोध से उनके नेत्र लाल हो जाएँगे, तब गहराई के मगरमच्छ तथा सर्प उनकी दृष्टि मात्र से काँप उठेंगे, और स्वयं समुद्र, अंगों में भय से काँपते हुए, उन्हें मार्ग देगा। रावण, जिसने कभी अपने ही वक्ष पर इन्द्र के हाथी ऐरावत के दाँत गर्व से चूर-चूर करवाए थे, विजय में हँसेगा — जब तक कि वह सीता का अपहरण करने तथा लंका के दोनों सेनाओं के बीच गर्व से चलने का साहस नहीं करता, जिस क्षण राम के धनुष की मात्र टंकार उसकी हँसी तथा उसके जीवन दोनों को समाप्त कर देगी।



भगवान् वामन राजा बलि के समक्ष अपने पगों से तीनों लोक नापते हैं, तथा भगवान् राम, सीता तथा लक्ष्मण के साथ, अपने पिता की आज्ञा से वन-वास पर निकलते हैं (श्लोक 17-18, 23-25)।

बलराम तथा कृष्ण की लीलामय बाल्यावस्था तथा कार्य

ब्रह्मा अब अपना सबसे लम्बा तथा सर्वाधिक प्रेमपूर्ण विवरण देते हैं: भगवान् का, बलराम के साथ, दैत्य-जन्मे राजाओं के भार से पृथ्वी को मुक्त करने के लिए अवतरण — दो रूप जिन्हें ब्रह्मा एक भगवद्-रूप के “एक धूसर तथा एक श्याम केश” कहते हैं, यद्यपि वास्तव में सम्पूर्ण, अखण्ड भगवान् हैं। दस दिन से कम आयु के शिशु के रूप में, वे राक्षसी पूतना के प्राण चूस लेते हैं; तीन मास की आयु में वे अपने पैर की एक ठोकर से एक गाड़ी को उलट देते हैं; हाथों-घुटनों के बल रेंगते हुए, वे दो विशाल अर्जुन-वृक्षों को, जिनके बीच से वे गुजरते हैं, गिरा देते हैं। ब्रज में, वे यमुना के विषैले जल से मरे हुए गोपों तथा गायों को अपनी कृपापूर्ण दृष्टि से पुनर्जीवित करते हैं, फिर उस नदी में स्वयं प्रवेश कर बहु-फणी सर्प कालिय को वश में कर निष्कासित करते हैं, उसके जल को शुद्ध करते हैं। उसी रात्रि, जब एक दावाग्नि सोए हुए गोपजनों को धमकाती है, वे तथा बलराम केवल उन्हें आँखें बन्द करने को कहकर उन सबको एक निश्चित विनाश से बचा लेते हैं। यशोदा माता जिस भी रस्सी से उन्हें बाँधने का प्रयास करती है वह छोटी पड़ जाती है, और जब, उन्हें जम्हाई लेते देख, वे उनके छोटे से मुख में चौदह लोकों की झलक पाती हैं, तो उनका

विस्मय तत्क्षण उनकी दिव्यता के बोध में बदल जाता है। वे अपने पिता नन्द को एक अजगर से तथा वरुण के पाश से मुक्त करते हैं, दैत्य व्योम द्वारा गुफाओं में बन्द किए गए गोप-बालकों को छुड़ाते हैं, और अन्त में गोकुल के लोगों को — जो पूरे दिन परिश्रम करते हैं और अत्यधिक थकान से रात्रि में मृतवत् सो जाते हैं — अपने ही शाश्वत धाम, वैकुण्ठ, ले जाते हैं। जब गोपजन, स्वयं भगवान् के परामर्श से, इन्द्र के प्रति वार्षिक अर्पण बन्द कर देते हैं, और इन्द्र क्रोध में व्रज को जलमग्न करते हैं, तब सात वर्ष के भगवान् गोवर्धन पर्वत को मानो एक कुकुरमुत्ता हो, ऐसे उठाकर सात दिनों तक धारण किए रखते हैं ताकि अपने जनों की रक्षा कर सकें। और वृन्दावन के कुंजों में एक चौदनी रात्रि में, उनकी बाँसुरी युवा गोपियों को रास-नृत्य के लिए आमन्त्रित करती है; जब कुबेर का अनुचर शंखचूड़ उनका अपहरण करने का साहस करता है, तो भगवान् बिना विलम्ब उसका सिर काट देते हैं।



बाल भगवान् कृष्ण अपनी उँगली पर सात दिनों तक गोवर्धन पर्वत उठाए रखते हैं, गोपजनों तथा उनकी गायों को इन्द्र की बाढ़ से आश्रय देते हुए (श्लोक 32)।

ब्रह्मा तत्पश्चात् लगभग एक ही साँस में उन असंख्य दैत्यों तथा शत्रु योद्धाओं की सूची गिनाते हैं जो कृष्ण, बलराम तथा उनके सहयोगियों के हाथों नष्ट होते हैं — प्रलम्ब, धेनुक, बक, केशी, अरिष्ट, मल्ल चाणूर, गजराज कुवलयापीड, कंस, कालयवन, नरकासुर, कृष्ण का स्वांग रचने वाला पौण्ड्रक, तथा बाद में शाल्व, द्विविद, बल्लल, दन्तवक्त्र, नग्नजित के सात बैल, शम्बर, विदूरथ, रुक्मी, तथा काम्बोज, मत्स्य, कुरु, केकय, तथा सृञ्जय के युद्धरत राजा — सब हरि द्वारा स्वयं अथवा बलराम, अर्जुन, तथा भीम के नामों से वध किए जाते हैं, और इस प्रकार उनके ही दिव्य धाम में प्रवेश पाते हैं।

व्यास, बुद्ध, तथा कल्कि: आने वाले युगों की रक्षा

जैसे-जैसे युग आगे बढ़ते हैं और मनुष्यों की बुद्धि तथा आयु घटती जाती है, ब्रह्मा कहते हैं, भगवान् सत्यवती के गर्भ से वेदव्यास के रूप में प्रकट होंगे, वेद-रूपी एक वृक्ष को अनेक शाखाओं में विभाजित करेंगे ताकि उन मनो द्वारा भी उसे ग्रहण किया जा सके जो अब उसे सम्पूर्ण रूप में धारण करने में सक्षम नहीं रहे। जब नास्तिकजन — वेदों में निपुण होते हुए भी उनके उद्देश्य के विरुद्ध हो चुके — दैत्य-वास्तुकार माया के छल से अदृश्य आकाश-दुर्ग निर्माण कर संसार को धमकी देंगे, तब भगवान् बुद्ध के रूप में एक मोहक, आकर्षक रूप धारण करेंगे, उन शिक्षाओं का प्रचार करते हुए जो उन लोगों को भ्रमित करती हैं जिन्होंने पहले ही सत्य का त्याग कर दिया है। और कलियुग के ठीक अन्त में, जब सज्जनों के

घरों में भी हरि की चर्चा नहीं होगी, जब द्विजजन स्वयं नास्तिक हो जाएँगे, जब निम्नतम मनुष्य राजा के रूप में शासन करेंगे, और जब “स्वाहा,” “स्वधा,” तथा “वषट्” के प्राचीन उच्चारण सुनाई नहीं देंगे, तब भगवान् कल्कि, कलि के दण्डदाता, के रूप में प्रकट होकर युगों को पुनः सही करेंगे।



युगों के महान् चक्र में अभी आने वाले दो अवतार: भगवान् बुद्ध के रूप में, तथा भगवान् कल्कि, कलि के दण्डदाता, के रूप में, जो वर्तमान युग के अन्त में प्रकट होंगे (श्लोक 37-38)।

भगवान् जिन्हें कोई पूर्णतः नहीं जान सकता

अपनी सूची पूर्ण करने के पश्चात्, ब्रह्मा एक विशालतर सत्य की ओर लौटते हैं। सृष्टि, पालन, तथा संहार — आरम्भ में स्वयं ब्रह्मा प्रजापतियों के साथ, मध्य में विष्णु शक्तिशाली देवताओं तथा राजाओं के साथ, तथा अन्त में शिव क्रुद्ध शक्तियों के साथ — सब एक ही परम शक्ति की अभिव्यक्तियाँ मात्र हैं। ब्रह्मा पूछते हैं, कौन विष्णु के पराक्रम का भी पूर्ण वर्णन कर सकता है, जिनका एक ही पग, त्रिविक्रम के रूप में, परम स्वर्ग सत्यलोक से परे, तीनों गुणों से भी परे बिन्दु तक सहजता से पहुँच गया? न ब्रह्मा, न नारद से पूर्व जन्मे कोई ऋषि, न ही सहस्र-मुख शेष — भगवान् का अपना प्रथम अंश, जिसने अनन्त काल उनकी स्तुति में व्यतीत किया है — उस ज्ञान की सीमा तक पहुँच सका है। केवल वह आत्मा जिसे अखण्ड समर्पण के द्वारा विशेष रूप से कृपा प्राप्त हुई है, ब्रह्मा कहते हैं, अन्यथा दुर्लभ माया-सागर को पार कर सकती है; जो शरीर से आसक्त रहते हैं — जो अन्ततः कुत्तों तथा गीदड़ों का आहार बनता है — वे नहीं कर सकते।

येषां स एष भगवान् दययेदनन्तः

सर्वात्मनाश्रितपदो यदि निर्व्यलीकम् ।

ते दुस्तरामतितरन्ति च देवमायां

नैषां ममाहमिति धीः श्वशृगालभक्ष्ये ॥ ४२ ॥

yeṣāṁ sa eṣa bhagavān dayayed anantaḥ sarvātmanāśrita-pado yadi nirvyalikam te dustarām atitaranti ca deva-māyām naiṣāṁ mamāham iti dhīḥ śva-śṛgāla-bhakṣye

अर्थ: अनन्त भगवान् केवल उसी आत्मा पर कृपा करते हैं जिसने अखण्ड हृदय से उनके चरणों की शरण ली है, और वही आत्मा माया के अन्यथा दुर्लभ सागर को पार कर पाती है — उस शरीर के प्रति “मैं” तथा “मेरा” के भाव से मुक्त होकर, जो अन्ततः कुत्तों तथा गीदड़ों का आहार बनता है। (SB 2.7.42)

ब्रह्मा तत्पश्चात् उन महान् आत्माओं की एक लम्बी शृंखला का नाम लेते हैं जो भगवान् की माया-शक्ति को जानती हैं तथा भक्ति द्वारा उसे पार कर चुकी हैं: स्वयं शिव; महान् भक्त प्रह्लाद; स्वायम्भुव मनु तथा उनकी रानी शतरूपा; उनकी सन्तानें प्रियव्रत, उत्तानपाद, आकूति, देवहूति, तथा प्रसूति; तथा ऋषियों तथा राजाओं की एक विशाल सूची — प्राचीनबर्हि, ऋभु, अंग, ध्रुव, इक्ष्वाकु, ऐल, मुचुकुन्द, जनक, गाधि, रघु, अम्बरीष, सगर, गय, नहुष, माँधाता, अलर्क, शतधन्वा, अनु, रन्तिदेव, भीष्म, बलि, अमूर्तरय, दिलीप, सौभरि, उत्तंक, शिबि, देवल, पिप्पलाद, तथा सारस्वत, साथ ही उद्धव, पराशर, भूरिषेण, विभीषण, हनुमान्, शुकदेव, अर्जुन, आर्षिषेण, विदुर, तथा श्रुतदेव। और ब्रह्मा सावधानीपूर्वक जोड़ते हैं कि यह ज्ञान केवल महानों के लिए सुरक्षित नहीं है: स्त्रियाँ, श्रमिक, वनवासी, पापपूर्ण जीवन जीने वाले, तथा भगवान् के भक्तों के पदचिह्नों का अनुसरण करने वाले पशु-पक्षी भी उनकी माया को समझ सकते हैं तथा उससे परे जा सकते हैं।

ते वै विदन्त्यतितरन्ति च देवमायां
स्त्रीशूद्रहूणशबरा अपि पापजीवाः ।
यद्यद्भुतक्रमपरायणशीलशिक्षा-
स्तिर्यग्जना अपि किमु श्रुतधारणा ये ॥ ४६ ॥

te vai vidanty atitaranti ca deva-māyām strī-śūdra-hūṇa-śabarā api pāpa-jīvāḥ yady adbhuta-krama-parāyaṇa-śīla-śikṣās tiryag-janā api kim u śruta-dhāraṇā ye

अर्थ: संसार जिन्हें तुच्छ मानता है — स्त्रियाँ, श्रमिक, वनवासी जनजातियाँ, पाप से बोझिल आत्माएँ, यहाँ तक कि पशु-पक्षी भी — भगवान् के अद्भुत भक्तों के आचरण तथा अनुशासन को अपनाते ही इस माया को जान लेते हैं तथा उसे पार कर जाते हैं; और जिसने वास्तव में उनकी शिक्षा को सुनकर हृदय में धारण किया है, उसके लिए यह और भी सुनिश्चित है। (SB 2.7.46)

परम सत्ता का स्वरूप तथा नारद को ब्रह्मा का आदेश

ब्रह्मा परम आत्मा के अपने आवश्यक स्वरूप के वर्णन के साथ अपनी शिक्षा समाप्त करते हैं: सदैव शान्त, निर्भय, शुद्ध चेतना, माया से अछूती, सत्य तथा असत्य दोनों से परे, शब्दों की पहुँच से परे तथा किसी भी अनुष्ठानिक कर्म के फल से परे — इतनी पूर्ण कि माया स्वयं, लज्जित होकर, उनकी उपस्थिति से भाग जाती है। यही वह ब्रह्म है जिसे ज्ञानीजन साक्षात्कार करते हैं, शाश्वत आनन्द के स्वरूप का; जो अपना मन उन पर स्थिर करते हैं, उन्हें भेद के बोध को विलीन करने के लिए किसी और साधना की आवश्यकता नहीं रहती, जैसे इन्द्र, स्वयं वर्षा के स्वामी होने के कारण, कुआँ खोदने के लिए फावड़े की आवश्यकता नहीं रखते। यही भगवान् प्रत्येक कर्म का फल प्रदान करते हैं, प्रत्येक कर्ता को उसकी अपनी प्रकृति के अनुसार प्रेरित करते हुए; और जैसे कोई शरीर अपने तत्त्वों के विघटन से नष्ट होता है, वैसे ही उसके भीतर अजन्मा आत्मा अछूता रहता है, ठीक वैसे ही जैसे किसी घड़े में व्याप्त आकाश उस घड़े के टूटने से खण्डित नहीं होता। यह सब कहने के पश्चात्, ब्रह्मा नारद की ओर सबसे कोमल निर्देश के साथ मुड़ते हैं: “मैंने तुम्हें, प्रिय पुत्र, संक्षेप में उस भगवान् के विषय में बताया है जो केवल विचार-मात्र से ब्रह्माण्ड

की रचना करते हैं; कारण अथवा कार्य के रूप में जो कुछ भी विद्यमान है वह हरि से भिन्न कुछ नहीं, यद्यपि वे उससे पृथक् भी खड़े हैं। यह वही भागवत है जो भगवान् ने स्वयं मुझे संक्षेप में सिखाया था — अब तुम इसका विस्तार करो, ताकि मनुष्य सर्वत्र हरि के प्रति भक्ति विकसित कर सकें, जो सार्वभौमिक आत्मा तथा सबके पालनकर्ता हैं।”

इदं भागवतं नाम यन्मे भगवतोदितम् ।

संग्रहोऽयं विभूतीनां त्वमेतद् विपुलीकुरु ॥ ५१ ॥

idaṁ bhāgavatam nāma yan me bhagavatoditam saṅgraho 'yaṁ vibhūtīnām tvam etad vipulīkuru

अर्थ: ब्रह्मा नारद से कहते हैं — यही शिक्षा, जो स्वयं भगवान् ने मुझे संक्षेप में दी थी, भागवत कहलाती है — यह उनकी अनन्त महिमाओं का मात्र एक बीज-सार है; अब तुम इसे विस्तृत करो तथा व्यापक बनाओ। (SB 2.7.51)

और यह जान लो, ब्रह्मा आगे कहते हैं: जो व्यक्ति भगवान् की इस माया का वर्णन करता है, अथवा किसी अन्य के वर्णन का अनुमोदन करता है, अथवा उसे प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक सुनता है, वह उसी माया से पुनः कभी मोहित नहीं होता।

माया वर्णयतोऽमुष्य ईश्वरस्यानुमोदतः ।

शृण्वतः श्रद्धया नित्यं मायया आत्मा न मुह्यति ॥ ५३ ॥

māyām varṇayato 'muṣya īśvarasyānumodataḥ śṛṇvataḥ śraddhayā nityaṁ māyayātmā na muhyati

अर्थ: जो कोई भगवान् की इस माया का वर्णन करता है, किसी अन्य के वर्णन का अनुमोदन करता है, अथवा प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक इसे सुनता भर है — वह आत्मा पुनः कभी उससे मोहित नहीं होती। (SB 2.7.53)

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. एक ही भगवान् युगों में असंख्य रूप धारण करते हैं। सृष्टि के आरम्भ में वराह से लेकर कलियुग के अन्त में कल्कि तक, प्रत्येक अवतार का एक उद्देश्य होता है — निर्दोष की रक्षा, धर्म की पुनर्स्थापना, ज्ञान की शिक्षा, अथवा केवल अपने भक्तों के साथ क्रीड़ा (श्लोक 1-38)।
2. शक्ति नहीं, भक्ति भगवान् को गतिमान करती है। वामन लेते नहीं, माँगते हैं; बलि का समर्पण उनके राज्य से भी बढ़कर है; गजेन्द्र की एक ही पुकार अनन्त भगवान् को तत्क्षण उनके पास ले आती है (श्लोक 15-18)।
3. कोई भी — ब्रह्मा अथवा शेष भी नहीं — भगवान् को पूर्णतः नहीं जानता। त्रिविक्रम के रूप में उनका पराक्रम मात्र ही अमापनीय है; केवल अखण्ड समर्पण, बौद्धिक प्रयास नहीं, उनकी माया के सागर को पार कराता है (श्लोक 40-42)।
4. यह ज्ञान सबके लिए है। शिव तथा प्रह्लाद से लेकर स्त्रियों, श्रमिकों, वनवासियों, तथा भक्तों के उदाहरण का अनुसरण करने वाले पशुओं तक, कोई भी समर्पित आत्मा भगवान् की माया को जान सकती है तथा उसे पार कर सकती है (श्लोक 46)।

5. भगवान् की माया को सुनना ही मन की रक्षा करता है। नारद को ब्रह्मा की अन्तिम शिक्षा केवल समझी जाने वाली एक दार्शनिकता नहीं, अपितु एक साधना है: भगवान् के विषय में प्रतिदिन बोलना, अनुमोदन करना, अथवा श्रद्धापूर्वक सुनना ही स्वयं भ्रम का उपचार है (श्लोक 53)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

इस ढंग में कुछ अद्भुत रूप से अनजल्दबाज़ी है जिससे ब्रह्मा ये कथाएँ सुनाते हैं। वे न तो उत्कण्ठा उत्पन्न करने के लिए रुकते हैं, न लम्बा उपदेश देते हैं; वे केवल अवतार-पर-अवतार का नाम लेते हैं, प्रत्येक को कुछ जीवन्त रेखाओं में चित्रित करते हैं — कूर्म की पीठ की खुजली, बाल कृष्ण के लिए बहुत छोटी पड़ती रस्सी, भगवान् के चरणों में झुका बलि का शीश — और आगे बढ़ जाते हैं, मानो भगवान् की लीलामयता की यह प्रचुरता स्वयं ही शिक्षा हो। और एक वास्तविक अर्थ में यह वही है। हम प्रायः यह कल्पना करते हैं कि श्रद्धा के लिए हमें ईश्वर कौन है और वह क्या चाहते हैं, इसका एक ही सुव्यवस्थित विवरण जानना आवश्यक है। यह अध्याय कुछ भिन्न प्रस्तुत करता है: एक भगवान् जो एक साथ प्रचण्ड नरसिंह भी हैं और तन्द्रालु कूर्म भी, विशाल त्रिविक्रम भी हैं और बहुत छोटी रस्सी से बँधा दुग्ध-चोर भी, आने वाले दण्डदाता कल्कि भी हैं और हमारे लिए वेदों को विभाजित करने वाले धैर्यवान् शिक्षक व्यास भी। इनमें से कोई भी रूप उन्हें समाप्त नहीं करता; और फिर भी प्रत्येक रूप पूर्णतः वे ही हैं। सम्भवतः यही नारद — तथा हमारे — लिए ब्रह्मा का वास्तविक उपहार है। हमें भगवान् से प्रेम करने से पहले उन्हें किसी एक सुलभ विचार में समेटने की आवश्यकता नहीं है। हमें केवल उन कथाओं को, एक के बाद एक, सुनते रहना है, जैसे कोई बालक अपने माता-पिता से उसे पुनः सुनाने का आग्रह करता है, और उस निरन्तर पुनरावृत्ति को ही उस मार्ग में बदलने देना है जो हमें माया के पार ले जाता है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, इस अध्याय में वर्णित अवतारों में से केवल एक को चुनें — शायद तत्क्षण उत्तर पाई गजेन्द्र की पुकार, अथवा बाल कृष्ण के मुख में चौदह लोकों को प्रकट करती झलक, अथवा बलि द्वारा अपनी समस्त सम्पत्ति का शान्त समर्पण। कुछ क्षणों के लिए उस एक चित्र के साथ बैठें, उसे यथासम्भव जीवन्त रूप से कल्पित करें, और देखें कि यह आपके भीतर क्या जगाता है: शान्ति, विस्मय, विनम्रता, अथवा तड़प। तत्पश्चात्, नारद को ब्रह्मा के अन्तिम निर्देश की भावना में, उसे किसी से मुखर होकर कहें, अथवा उसे स्वयं को पूर्ण ध्यान के साथ मौन में एक बार पुनः सुनाएँ — क्योंकि अध्याय स्वयं यह वचन देता है कि जो मन प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक भगवान् की माया का वर्णन अथवा श्रवण करता है, वह उससे पुनः कभी मोहित नहीं होता। अन्त में धीरे-धीरे कुछ बार दोहराएँ: “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।”

उपसंहार

द्वितीय स्कन्ध का सप्तम अध्याय, अपने बाह्य स्वरूप में, एक सूची है — ब्रह्माण्ड के युगों में भगवान् के अवतारों का एक तीव्र-गति क्रम। किन्तु भक्तिपूर्वक सुना जाए, तो यह कहीं अधिक समृद्ध कुछ बन जाता है: एक ऐसे ईश्वर का चित्रण जो अपने प्रेम में अनन्त रूप से सम्पन्न हैं, जो एक वराह, एक वामन, माखन-चोर एक शिशु, एक दण्डदाता योद्धा, अथवा दण्ड देने वाला भावी राजा — जो भी क्षण की माँग हो, बनने को सदैव तत्पर हैं। ब्रह्मा, जो इस महिमा में कथाकार के रूप में कुछ अंश का दावा कर सकते थे, इसके स्थान पर सम्पूर्ण शिक्षा को नारद को, तथा उनके माध्यम से हमें, लौटाकर समाप्त करते हैं — यह आग्रह करते हुए कि माया से अछूता रहने का सबसे सुनिश्चित मार्ग केवल यही है कि इन्हीं

कथाओं को प्रेमपूर्वक कहते रहें तथा सुनते रहें। वराह के पृथ्वी उठाने से लेकर आने वाले कल्कि तक, इस अध्याय का सन्देश वही है जो ब्रह्मा आरम्भ से देते आ रहे हैं: कि प्रत्येक रूप तथा प्रत्येक युग के पीछे, सदैव केवल वह एक परम पुरुष है, जो अपने प्रेमियों के हित के लिए अनन्त काल तक क्रीड़ा करता है।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जागृत करे।

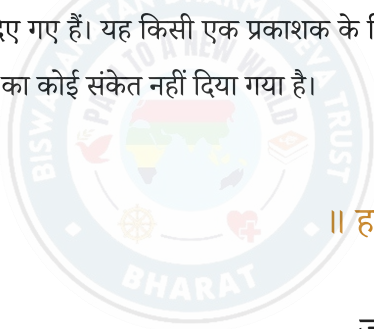
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ तथा श्रेय

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), द्वितीय स्कन्ध, सप्तम अध्याय, पृष्ठ 110–118।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़्डम • बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिखाए गए हैं और उनके अर्थ सार-रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा टीका की प्रतिकृति नहीं है। किसी भी प्रकाशक के साथ सम्बद्धता अथवा समर्थन का कोई संकेत नहीं दिया गया है।



॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-2-chapter-7-lords-sportful-descents-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज़्डम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट